تَكْذِيْبٍ ﴿۱۹﴾ وَّ اللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿۲۰﴾ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿۲۱﴾

हैं[18] और अल्लाह उन के पीछे से उन्हें घेरे हुए है[19] बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कुरआन है

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾

ع ١٠/٢٢

लौहे महफ़ूज़ में

اٰياتها ١٧ | ٨٦ سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ ٣٦ | رکوعها ١

सूरए तारिक़ मक्किय्या है, इस में सतरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿۱﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿۲﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿۳﴾

आस्मान की क़सम और रात को आने वाले की[2] और कुछ तुम ने जाना वोह रात को आने वाला क्या है खूब चमकता तारा

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿۴﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿۵﴾ خُلِقَ

कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो[3] तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया[4] जस्त

مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿۶﴾ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿۷﴾ اِنَّهٗ عَلٰى

करते (उछलते हुए) पानी से[5] जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से[6] बेशक अल्लाह उस के

رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ﴿۸﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿۹﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا

वापस कर देने पर[7] क़ादिर है जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी[8] तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न

18 : आप को और कुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था **19 :** उस से उन्हें कोई बचाने वाला नहीं। **1 :** "सूरतुत्तारिक़" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, सतरह आयतें, इक्सठ कलिमे, दो सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी सितारे की जो रात को चमकता है। **शाने नुज़ूल :** एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिय्या लाए, हुज़ूर उस को तनावुल फ़रमा रहे थे इस दरमियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़ज़ा आग से भर गई, अबू तालिब घबरा कर कहने लगे : येह क्या है ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह सितारा है जिस से शयातीन मारे जाते हैं और येह कुदरते इलाही की निशानियों में से है। अबू तालिब को इस से तअ़ज्जुब हुवा और येह सूरत नाज़िल हुई। **3 :** उस के रब की तरफ़ से जो उस के आ'माल की निगहबानी करे और उस की नेकी बदी सब लिख ले। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद इस से फ़िरिश्ते हैं। **4 :** ताकि वोह जाने कि इस का पैदा करने वाला इस को बा'दे मौत जज़ा के लिये ज़िन्दा करने पर क़ादिर है, पस इस को रोज़े जज़ा के लिये अ़मल करना चाहिये। **5 :** या'नी मर्द व औ़रत के नुत्फ़ों से जो रेहूम में मिल कर एक हो जाते हैं। **6 :** या'नी मर्द की पुश्त से और औ़रत के सीने के मक़ाम से। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : सीने के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और इन्हीं से मन्क़ूल है कि औ़रत की दोनों छातियों के दरमियान से। येह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आ'ज़ा से बरआमद होती है और इस का ज़ियादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औ़रत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी रगों में जो सीने के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है, इसी लिये इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र खुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **7 :** या'नी मौत के बा'द ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर **8 :** छुपी बातों से

www.dawateislami.net

نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ

कोई मददगार[9] आस्मान की क़सम जिस से मींह उतरता है[10] और ज़मीन की जो उस से खुलती है[11] बेशक क़ुरआन

لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّ

ज़रूर फ़ैसले की बात है[12] और कोई हंसी की बात नहीं[13] बेशक काफ़िर अपना सा दाउं चलते हैं[14] और

اَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾ ع

मैं अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता हूं[15] तो तुम काफ़िरों को ढील दो[16] उन्हें कुछ थोड़ी मोहलत दो[17]

اٰيَاتُهَا ١٩ | (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ (٨) | رُكُوْعُهَا ١

सूरए आ'ला मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِيْ قَدَّرَ

अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है[2] जिस ने बना कर ठीक किया[3] और जिस ने अन्दाज़े पर रख कर

فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

राह दी[4] और जिस ने चारा निकाला फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

अब हम तुम्हें पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे[5] मगर जो अल्लाह चाहे[6] बेशक वोह जानता है हर खुले और

मुराद अ़क़ाइद और निय्यतें और वोह आ'माल हैं जिन को आदमी छुपाता है, रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला उन सब को ज़ाहिर कर देगा। **9 :** या'नी जो आदमी मुन्किरे बअ़्स है न उस को ऐसी क़ुव्वत होगी जिस से अ़ज़ाब को रोक सके न उस का कोई ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके। **10 :** जो अर्ज़ी पैदावार नबात व अश्जार के लिये मिस्ल बाप के है। **11 :** और नबातात के लिये मिस्ल मां के है और येह दोनों अल्लाह तआ़ला की अ़जीब ने'मतें हैं और इन में क़ुदरते इलाही के बे शुमार आसार नुमूदार हैं जिन में ग़ौर करने से आदमी को बअ़्से बा'दल मौत के बहुत से दलाइल मिलते हैं। **12 :** कि ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर देता है। **13 :** जो निकम्मी और बेकार हो। **14 :** और दीने इलाही के मिटाने और नूरे ह़क़ को बुझाने और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ईज़ा पहुंचाने के लिये त़रह़ त़रह़ के दाउं करते हैं। **15 :** जिस की उन्हें ख़बर नहीं **16 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **17 :** चन्द रोज़ कि वोह अ़न्क़रीब हलाक किये जाएंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और बद्र में उन्हें अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ा "وَنُسِخَ الْاِمْهَالُ بِاٰيَةِ السَّيْفِ" **1 :** "सूरतुल आ'ला" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, बहत्तर कलिमे, दो सो इकानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस का ज़िक्र अ़ज़्मतो एह़तिराम के साथ करो। ह़दीस में है : जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को अपने सज्दे में दाख़िल करो या'नी सज्दे में "سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی" कहो। (ابوداؤد) **3 :** या'नी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़रमाई जो पैदा करने वाले के इ़ल्मो ह़िक्मत पर दलालत करती है। **4 :** या'नी उमूर को अज़ल में मुक़द्दर किया और उस की त़रफ़ राह दी या येह मा'ना हैं कि रोज़ियां मुक़द्दर कीं और उन के त़रीक़े कस्ब की राह बताई। **5 :** येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बिशारत है कि आप को ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की ने'मत

www.dawateislami.net